युक्ति से मुक्ति

एक किसान था। उसके पास एक तोता था और एक बकरी थी। गर्मी के महीने में तीनों का भूख प्यास से बुरा हाल था। उस किसान के पास पैसा भी नहीं था, जिससे कि तीनों प्रणियों की उदर पूर्ति हो जाती। उस किसान को अपने से अधिक उन **निरीह प्राणियों** की चिंता थी। क्योकि तोता और बकरी अपनी व्यथा किसान से कह भी नहीं सकते थे।

अब तो किसान को भगवान का ही सहारा था। फिर उसने अपनी जेब और अंटी को टटोला कि शायद उसमे से कुछ पैसे मिल जाय और तीनो प्राणियों को जीवन दान मिले।

देव योग से उसकी अंटी में एक रूपए का सिक्का पड़ा था। लेकिन वह भी तीनों की **उदर पूर्ति** नहीं कर सकता था। सहसा किसान को एक युक्ति सूझी।

पास में एक बाजार था। किसान दोनों को लेकर बाजार में गया और वहां से पच्चास पैसे में एक बड़ा सा तरबूज लिया और उसे छीलके को अलग किया तरबूज के गूदे में जो बीज थे, उसे भी निकालकर एक तरफ रख दिया।

तरबूज के गूदे से अपनी भूख को शांत किया। छिलका बकरी को खिलाया तो उसकी जान में जान आई। तरबूज के बीज को खाकर तोता बहुत आनंदित हुआ। किसान अपने साथियों के साथ घर वापस लौट आया।

किसान ने अपनी युक्ति से खुद को और दो प्राणियों को भी भूख से मुक्ति दिलाया। इसलिए कभी हार नहीं माननी चाहिए। हर परिस्थिति में लड़ना चाहिए। सफलता अवश्य ही मिलेगी।

सीरियल की लत

मित्रों की भी चीज की लत अच्छी नहीं होती है। आज की यह **हिंदी कहानी** इसी पर आधारित है। एक गांव में सुधा नाम की औरत रहती थी। उसे टीवी सीरियल देखने की लत थी। **सीरियल** को मिस ना कर देने के चक्कर में वो खाना जल्दी-जल्दी बनाने के बदले उसे बिगाड़ देती थी।

उसे खाने के लिए उसका पति रमेश और बेटा विकास बहुत तकलीफ उठाते थे। सुधा उनकी कमीज़ पर इस्री रख कर भूल जाती है और टीवी सीरियल देखने में मशगूल हो जाती थी।

वो दोनों नए कमीज़ खरीदते-खरीदते तंग आ चुके थे। **सुधा का पसंदीदा सीरियल था पगली सास और प्यारी बहु** । खासकर उस सीरियल में **बहु रेखा से बहुत प्यार था।**

एक दिन सुधा अपने बेटे से कहती है:- देख बेटा। उस लड़की को सास से कितना प्यार है। सवेरे सास को प्रणाम किये बिना कोई काम नहीं करती। सास के लिए विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाती है। अपने पति की कमाई भी सास को ही देने को कहती है। यदि वो लड़की मेरी बहु बन जाये तो मेरा जन्म सफल हो जाये। तुम किसी तरह रेखा से जल्दी शादी कर लो बेटा।

विकास:- क्या बात करती हो माँ। आज कल तुम्हे टीवी सीरियल और वास्तविकता में कोई फ़र्क़ नहीं दिखता ? वो एक एक्टर है और टीवी सीरियल में रेखा का किरदार निभा रही है। वो वही करती है जो राइटर लिखता है। वो सब सच नहीं है माँ।

सुधा:- क्यों बेटा, अब मुझे **कहानी** सुना रहे हो। तुम कह रहे हो कि मेरी रेखा **नाटक कर रही है**। क्या तुमने कभी देखा है कि उसकी आँखों में उसकी सास के लिए कितना प्यार और आदर है और जब वो उनके पैर दबाती है। मैं वो सब कुछ नहीं जानती। तुम उससे शादी करते हो या मैं मर जाऊ ? विकास सर पकड़ लेता है। रेखा को ढूँढ़ते हुए वो मुंबई गया। सुधा बहुत खुश हुई। कुछ दिनों बाद विकास रेखा से शादी करके उसे घर ले आया।

विकास:- माँ, ये जिस दूसरे दूसरे सीरियल में काम कर रही थी वहाँ शादी का मंडप लगा था। पैसे बचाने के लिए हमने वही शादी कर ली।

सुधा:- अच्छा किया बेटा। यकीन नहीं आता ये सपना है या सच। बेटी एक बार मुझे चिमटी काटना। रेखा ने सुधा का हाथ पकड़ कर **उसे ज़ोर से चिमटी काटी।**

सुधा:- हाय रे, मैं मर गयी अब छोड़ दो। बस बहुत हो गया। सुधा अंदर जा कर आरती की थाली लाती है। विकास सुधा के पैर छूता है लेकिन रेखा बोलती है:- **मेरी कमर में अकड़ आ गयी है इसलिए मैं आपके पैर नहीं छू सकती। वैसे इस मॉडर्न ज़माने में ये दकियानूसी रिवाज़े कौन मानता है।**

सुधा दंग रह गयी। सुधा रेखा से कहती है:- बेटी, उस सीरियल में तुम अपनी सास को बहुत अच्छे-अच्छे व्यंजन बना के खिलाती हो ना। परसो ही एक सीरियल में **सैंडविच** देखा था मैंने। उसे खाने के लिए बहुत तरस रही हूँ। बेटी, ज़रा बना दोगी।

रेखा:- उसमे क्या है माँ जी। अभी लाती हूँ। कहकर रेखा चली गयी और थोड़ी देर बाद गर्म ब्रेड लेकर आयी और बोली:- ये लीजिये माँ जी। आपका सैंडविच।

सुधा:- ये क्या मज़ाक है बेटी ? क्या तुम भूल रही हो कि मैं तुम्हारी सास हूँ।

रेखा:- और नहीं तो क्या। मैं आपकी बहु हूँ कोई बावर्ची नहीं। ऊपर से सैंडविच चाहिए। सैंडविच हुँह। उसे यूट्यूब पर देखो, सीखो, बनाओ और खाओ। मैंने कभी ज़िंदगी में रसोई में पैर भी नहीं रखा है।

सुधा हैरान हो गयी। एक और दिन सुधा कहती है:- रेखा बेटी तुम मेकअप तो अच्छा बना लेती हो। हमे शादी में जाना है। क्या तुम मेरा भी मेकअप कर दोगी?

रेखा सुधा का मेकअप करती है। उसके पुरे गाल गुलाबी कर देती है और आँखों के चारो ओर काजल फैला देती है। फिर दोनों शादी में गए तो सुधा को देख कर दूल्हा-दुल्हन भूत-भूत कहकर भाग गए।

दुल्हन की माँ सुधा से कहने लगी:- ये क्या बनकर आयी हो सुधा ? तुम पागल हो गयी हो क्या ? कहकर सुधा को आइना दिखाती है। आईने में खुद को देख कर वो कहती है:- ये क्या है बेटी?

रेखा:- मुझे बस इतना ही आता है। मुझे मेकअप करवाना आता है, करना नहीं। एक दिन सुधा टीवी देख रही थी तो रेखा ने आ कर टीवी बंद कर दिया और बोली:- ये क्या है चौबीसों घंटे टीवी-टीवी। हह। क्या घर में थोड़ी देर के लिए आराम भी नहीं कर सकते।

सुधा:- ये क्या बेटी। मैं तो तुम्हारे ही टीवी सीरियल देख रही हूँ। ऐसे क्यों चिढ़ रही हो?

रेखा:- मुझे उस टीवी सीरियल से ही नफरत है। पैसो के लिए ही करना पड़ता है। वरना उस पागल सास की सेवा करू और वो भी मैं। हह। सुधा को ज़ोर का झटका लगता है। एक दिन विकास सुधा के हाथ में पैसे दे कर बोलता है:- **ये लो माँ। मेरी तन्खा।**

तभी रेखा ने आ कर उसे छीन लिया और बोली:- तन्खा माँ को दे रहे हो। एक पैर कबर में है अब ये पैसो का क्या करेगी ? अब इस घर की ज़िम्मेदारी मेरी है। अलमारी की चाबी भी मुझे दे कर एक कोने में बैठ कर राम नाम के जाप करते रहो।

सुधा:- ये क्या बकवास कर रही हो। तुम मुझे नहीं जानती। इतना कहकर उसने कोने में पड़ा झाड़ू उठाया और रेखा ने भी तुम भी मुझे नहीं जानती कहकर कोने में पड़ा घड़ा उठाया। दोनों लड़ने ही वाली थी कि विकास ने उन्हें रोका तो सुधा विकास से कहने लगी:- बेटा, ये मुझे नहीं चाहिए। वो तो मेरा दिमाग खराब हो गया था कि मैंने इसे बहु बना कर लाने को कहा। सीरियल में बड़ी **एक्टिंग** करती थी। इसकी मीठी बातो को सुन कर मैं पिघल गयी थी। मैं नहीं जानती थी कि ये **झगड़ालू औरत** है। **मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ बेटा, अपनी पत्नी से मुझे बचा लो।**

विकास:- देखो माँ। इतने दिन तुम सीरियल में होने वाली घटनाओँ को वास्तव समझ कर भ्रम में रह रही थी। अब समझ गयी हो ना ?

सुधा:- मेरी अकल ठिकाने आ गयी है बेटा। अब से मैं सीरियल को सीरियल की तरह ही देखूंगी। पर इससे कैसे पीछा छुड़ाऊँ ?

विकास:- रेखा, तुम वाकई में एक बहुत बेहतरीन एक्टर हो। मेरी बात मान कर, मेरे घर आ कर नाटक करने के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया। तुम्हे पैसे मिल गए है ना। अब तुम जा सकती हो।

सुधा:- क्या ? ये सब नाटक था ? **रेखा:-** जी हां, आंटी। आपके बेटे ने आ कर मुझे आपके बारे में बताया। तो मैं यहाँ आ गयी। मेरे लिए तो टीवी, सीरियल, सिनेमा या घर सब समान है। परफॉरमेंस करती हूँ और पेमेंट लेती हूँ। चलती हूँ आंटी।

सुधा:- शुक्र है। अब कभी सीरियल के चक्कर में नहीं पड़ूँगी बेटा। फिर उस दिन से सुधा सिर्फ कुछ सीरियल देख कर घर का काम करने लगी और बेटे के लिए अच्छे रिश्ते ढूंढ़ने लगी।